

वेदांतपर हिंदी पदे

पद ३२२

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

नयन दिया नयननसे जानो । हम कहते सो बुरा मत मानो ॥ध्रु.॥
नयन दिया कछु देखन भाई । तुम देखत हो माल लुगाई ॥१॥
नयन रहते अंधे क्यों होते । नजर आइसो चीज न पाते ॥२॥ माणिक
कहे नयन नरराजा । जिन्हें नयन से साहेब खोजा ॥३॥